RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 14 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 7 सितम्बर 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

लोक पर्वों में झूम रहा है पहाड़

नन्दा के भक्तों का मर्तोली में जमावड़ा और हिमालय की परम्पराओं का संकल्प

डीडीहाट में नन्दा महोत्सव का भव्य आयोजन होगा

नन्दा-सुनन्दा का परम्परागत डोला अल्मोड़ा नैनीताल सहित अन्य स्थानों पर तय

जन्माष्टमी में रानीखेत की की परम्परा और गंगोलीहाट में सांस्कृतिक आयोजन

झोड़ा-चांचरी के साथ लोक परम्पराओं से युवाओं को जोड़ने का सराहनीय कार्य

कार्यालय प्रतिनिधि

त्यौहारों और लोक पर्वों के इन दिनों में पूरा पहाड़ झूम रहा है। उत्तराखण्ड में होने वाले लोक उत्सवों की धूम में झोड़ा-चांचरी के साथ लोक परम्पराओं से युवाओं को जोड़ने का यह सराहनीय कार्य है।

मुख्य उत्सव के रूप में नन्दा पूजा है। नन्दा के भक्तों का मर्तोली में जमावड़ा देखा गया, जिन्होंने हिमालय की परम्पराओं का संकल्प दोहराया। हिमालयी माँ नन्दा देवी ट्रस्ट द्वारा सभी भक्तों की खुशहाली का कामना की गई है। सीमान्त क्षेत्र स्थित नामिक में भी नन्दा पूजा का भव्य आयोजन नन्दाष्टमी को होगा। नन्दा-सुनन्दा का परम्परागत डोला अल्मोड़ा नैनीताल सहित अन्य स्थानों पर होना है, जिसके लियें श्रद्धालुओं पूरी तैयारी में हैं। डीडीहाट में नन्दा महोत्सव का भव्य आयोजन तय है जिसमें स्थानीय कलाकारों के अद्भुत सामूहिक नृत्यगीतों से भरपूर मनोरंजन देखने को मिलेगा।

इससे पहले गौरा-महेश्वर पर्व का उत्सव पूरे प्रदेश में मनाया गया। कृषि और पशुपालन से जुड़े त्यौहारों का उत्सव के बाद बदलते

शेष पृष्ठ 2 पर

लखिया बाबा के जयघोष से गूंजी सोर घाटी

डॉ.मनीषा पाण्डे तिवारी

पिथौरागढ़ के ऐतिहासिक कुमौड़ गाँव में पारम्परिक 'हिलजात्रा' का भव्य आयोजन किया गया। पिछले 500 वर्षों से अनवरत चली आ रही इस लोक सांस्कृतिक धरोहर को देखने के लिये बारिश के बावजूद कुमौड़ गाँव के हिलजात्रा मैदान में हजारों की संख्या में लोग उमड़ पड़े।

'हिलजात्रा' का शाब्दिक अर्थ है- कीचड़ में की जाने वाली यात्रा। यह पर्व मुख्य रूप से धान की रोपाई, कृषि और पशुपालन से जुड़ी लोक संस्कृति का प्रतीक है। लोक अस्था और संस्कृति से जुड़े इस 'हिलजात्रा' को देखने दूर-दूर से आए लोगों का बरसात में भीगते हुए भी उत्साह कम नहीं था। उत्सव के दौरान पारम्परिक मुखौटा नृत्य के माध्यम से कृषि कार्यों का सजीव मंचन किया गया, जिसमें कलाकारों ने हल जोतने वाले, डले फोड़ने वाले, कमेड़ लगाने वाले, पुतारियां हुक्का पीने

शेष पृष्ठ 2 पर

भगवान शिव के गण वीरभद्र का अवतार 'लखिया भूत'

लोक कथाएं —— यू.आर.टम्टा

तेरहवीं का चाँद

हंसा बचपन से ही बड़ा जिद्दी था व झगड़ालू भी। वह जब दो ही साल का था, दूसरे बच्चों के हाथ से चीजें छीन लेता और किसी भी कीमत पर देने को तैयार नहीं होता। दूसरी ओरवह अपनी कोई चीज कभी भी किसी को नहीं देता था। उसकी माँ यदि किसी बच्चे को उसके सामने ही कोई चीज दे देती तो वह झपट कर छीन लेता। जिद्दीइतना कि जिस बात पर अड़ जाय, उसकी इच्छा पूरी ही करनी पड़ती। दाल में नमक बहुत अधिक भी पड़ा हो तो वह शिकायत करता कि नमक बिल्कुल भी नहीं पड़ा है। माँ चख कर देखती तो पता चलता कि नमक जरूरत से ज्यादा पड़ा है, पर उसकी जिद पूरी करने के लिये वह चुटकी भर मैदा या आटा चुपचाप लाकर उकसे सामने ही दाल में बुरका देती। फिर वह शिकायत करता कि अब नमक ज्यादा हो गया है, उसके लिये दूसरी दाल बनाई जाय।

एक बार उनके घर पर एक ज्योतिषी आया। ज्योतिषी को उसकी जन्मकुण्डली दिखाई गई। ज्योतिषि ने उसका हाथ भी देखा। उसके सामने उसने कहा कि बच्चा बहुत भाग्यशाली है। यह जीवन में अच्छा ही खायेगा पियेगा। हंसा ने इसका अर्थ अपनी समझ के हिसाब से लगाया। वह उस दिन से दाल रोटी में हाथ नहीं लगाता। कहता कि ज्योतिषी ने कहा है कि अच्छा ही खाना खायेगा, मक्खन, दही व घी के साथ ही वह रोटी खायेगा। ज्योतिषि ने उसके विषय में भविष्यवाणी की थी कि वह बड़ा होकर अपार सम्पत्ति का मालिक बनेगा। यह तो विवाद का विषय हो सकता है कि ज्योतिष का कोई वैज्ञानिक आधार भी है या नहीं, पर यह बात निर्विवाद थी कि इससे उसकी मत्वाकांक्षा में अपरिमित रूप से वृद्धि हो गई। अत: जिद्दी झगड़ालू स्वभाव में कुछ कमी होने पर उसने बचपन से ही कड़ी से कड़ी मेहनत करना प्रारम्भ कर दिया था। उसके जवान होते ही माँ-बाप चल बसे। अत: पूरी घर गृहस्थी की जिम्मेदारी उसके कन्धों पर ही आ गई, पर इससे वह हताश कभी नहीं हुआ।

उसने अपनी मेहनत जारी रखी भूमि को सुधारा। उसमें अच्छी फसलें पैदा होने लगीं। वह अपने ही काम में व्यस्त रहता। और धीर-धीरे उसके पास सम्पत्ति के अम्बार लगने लगे। उसका झगड़ालू स्वभाव भी अब बदल गया। बचपन का जिद्दीपन भी अब उसमें नहीं रहा था परन्तु इनके स्थान पर सम्पत्ति के संग्रह की प्रवृत्ति तीव्र रूप से उसमें विकसित होने लगी थी। उसने इतनी अधिक सम्पत्ति अर्जित कर ली थी कि आने वाली पाँच पीढ़ियाँ भी यदि कोई काम न करें, तो भी कोई अन्तर पड़ने वाला नहीं था, पर सम्पत्ति की उसकी भूख दिन-पर-दिन बढ़ती ही गयी। एक ओर सम्पत्ति के अम्बार लग रहे थे, पर दूसरी ओर उसकी कोई सन्तान ही उत्पन्न नहीं हुई। गंडा तावीज वैद्यक इलाज-कोई भी नहीं छोड़ा, पर सब निष्फल रहा। सन्तान न होने का दुख उसे बहुत अधिक था, मुख्य रूप से इस बात की चिन्ता उसे सताये जा रही थी कि उसके मरने के बाद सम्पत्ति दूसरों के हाथ पड़ जायेगी। किसी दूसरे के हाथ न भी पड़ी तो सरकार ही ले लेगी। यह दोनों स्थितियां उसके लिये दुखद थीं। लोगों ने उसे सलाह दी कि कोई बच्चा गोद ले ले, पर इसके लिये उसके समक्ष दो समस्याएं थीं, एक तो उसका न तो कोई भाई भतीजा था और न ही कोई निकट रिश्तेदार, जिसका बच्चा गोद ले सके, दूसरे वह इतनी मेहनत से अर्जित की गई सम्पत्ति का वारिस किसी ऐसे व्यक्ति को बनाने के लिये अपना मन नहीं बना पाया था, जिससे उसका खून

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

हिमालय की पिघलन से नेपाल दहला और बड़ी चेतावनी

पड़ोसी देश नेपाल में 26 अगस्त की भोर दुखभरी रही। यहाँ तिब्बत की ओर से आ रही नदी ने अचानक रौद्र रूप धारण कर लिया और देखते ही देखते जलसैलाब अपने रास्ते में आने वाला सबकुछ बहा ले गया। असल में हिमालय की पिघलन से नेपाल क्या दहला, इसने हम सभी के लिये बड़ी चेतावनी दी है। हिमालयी राज्यों में किस क्रूरता के साथ दोहन किया जा रहा है और नदियों का सीना चीर कर खनिज की लूट मची है, वह सब हिसाब प्रकृति ने लेना ही है।

इतिहास बताता है कि जब-जब मनुष्य ने प्रकृति के विरुद्ध जाने की कोशिश की उसकी उसे बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। 26 अगस्त 2026 को नेपाल में आई आपदा ने चेतावनी को दोहरा दिया है। वैश्विक स्तर पर भी इसे जलवायु परिवर्तन और अनियोजित विकास की भयावह स्थिति को समझा जा रहा है। इसमें आपदा में नदीसे लगे हुए दर्जनों गाँवों, कस्बों, जलविद्युत परियोजनाओं पर बड़ा असर हुआ है।

विश्व के पर्वतीय क्षेत्रों में अनेक घटनाएं पहले भी हुई हैं और हिमालय इससे अछूता नहीं है। हालांकि वैज्ञानिकों की सबसे महत्वपूर्ण चेतावनी यह है कि अचानक आई बाढ़ को केवल बांध टूटने या ग्लेशियर फटने का परिणाम कहना सही नहीं है। किसी घटना का वास्तविक कारण जानने के लिये वर्षा के आंकड़ों, उपग्रह चित्रों, नदी के जलस्तर, भूस्खलन का प्रमाण और जलवैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता होती है। 4 अक्टूबर 2023 को सिक्किम में दक्षिण ल्होनाक झील से जुड़ी एक विनाशकारी हिमनदीय झील विस्फोट बाढ़ आई। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार झील के आसपास हुए भूस्खलन तथा बर्फ और चट्टान के बड़े पैमाने पर खिसकने से पानी अचानक बाहर निकला और तीस्ता नदी घाटी में बाढ़ आई। इस आपदा में तीस्ता तीन बांध सहित कई महत्वपूर्ण ढांचों पर भारी नुकसान हुआ। चालीन से अधिक लोगों की मौत हुई और बड़ी संख्या में लोग लापता हुए। सिक्कम की घटना ने स्पष्ट किया कि हिमालयी आपदा को केवल एक कारण से समझना खतरनाक है। हिमनदीय झील, भूस्खलन, अत्यधिक जलप्रवाह और नदी पर मौजूद मानव निर्मित ढांचे मिलकर नुकसान को कई गुना बढ़ा सकते हैं। सात फरवरी 2021 को उत्तराखण्ड के के चमोली जिले में ऋषिगंगा और धौलीगंगा घाटियों में अचानक अत्यन्त शक्तिशाली बाढ़ आई। प्रारम्भिक चर्चाओं में इसे हिमनद टूटने की घटना बताया गया, लेकिन बाद के वैज्ञानिक अध्ययनों में इसे एक जटिल चट्टान-बर्फ के विशाल खिसकाव से जुड़ी घटना माना। पहाड़ से विशाल मात्रा में चट्टान और बर्फ नीचे गिरी और उसने पानी तथा मलबे को अत्यधिक वेग से घाटी में धकेला। इस आपदा में लगभग 200 से अधिक लोग मारे गए या लापता हुए। इसी प्रकार जून 2013 में केदारनाथ क्षेत्र की आपदा करीब 5700 लोगों की मृत या लापता माना गया। घटनाओं का यह इतिहास बहुत पुराना है।

हिमालय को भारत और दक्षिण एशिया की जीवनरेखा कहा जाताहै। यही हिमालय नदियों को जन्म देता है और करोड़ों लोगों को जल उपलब्ध कराता है लेकिन यही हिमालय चेतावनी भी देता रहा है। केदारनाथ, थराली की भयानक घटनाओं के बाद अब नेपाल की की इस बड़ी घटना ने स्पष्ट संकेत किया है कि यह हिमालयी क्षेत्र में बढ़ते पर्यावरणीय और जलवायु संकट की गम्भीर कड़ियां हैं। इसलिये सावधान!

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

जापान की कम्पनियों से निवेश का आह्वान

टोक्यो। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत कम से कम आठ-नौ देशों के समूहों तथा अगल-अलग देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों के लिये बातचीज कर रहा है। इससे कुल 15 हजार अरब डॉलर की अतिरिक्त जीडीपी वाली अर्थव्यवस्थाओं तक भारत की पहुंच होगी। उन्होंने जापान की कम्पनियों से भारत में निवेश का आह्वान किया।

जासूसी के आरोप में गिरफ्तार

अमृतसर। भारतीय सेना के ठिकानों की जानकारी पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई तक पहुंचाने के आरोप में पुलिस ने चन्दनदीप सिंह निवासी सराय अमानत खां को गिरफ्तार किया हे। आरोप से मोबाइल फोन बरामद किए हैं। डाटा खंगालने पर सेना को कई जानकारियां मिली हैं।

आत्मसम्मान से समझौता किया : शरीफ

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के प्रध ड़ा है। साथ ही आत्मसम्मान की कीमत पर समझौता करना पड़ा।

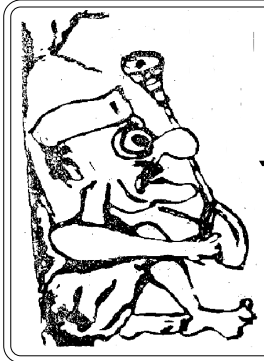

फसक

दाज्यू, अपनी ठौर बनाने को दूसरे को उचेड़ रहे ठैरे

नेताओं की सारी शालीनता अब गाड़ बग गई है बल

दाज्यू, जंगल में सारे जानवर एक-दूसरे से बचते हुए चलते हैं और जानते हैं कि किसी भी पल मौत का सामना हो सकता है लेकिन शहर बसा कर रहने वाले लोग नहीं समझ रहे हैं कि उनका भी मौत से सामना होगा। यही कारण है सब फोड़ाफोड़ में लगे हुए हैं। दाज्यू, चुटाचूट देखकर हम तराई से पहाड़ को आ गये। क्या जो करते उस हकाहाक में? विधायक शिव अरोरा और पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल कमिश्नर सैप के आगे ही भिड़ गये। कपोराकपोर होने वाली थी, लोगों ने बीच बचाव किया। 'तेरी क्या औकात है' जैसा भी कह रहे थे वह लोग। दाज्यू, बेढप जमाना हो चुका है। अपनी ठौर बनाने को दूसरे को उचेड़ रहे ठैरे।

किसका माननीय, कैसा माननीय। सब मिट्टी में मिसी गया ठैरा। तभी तो अरोरा-ठुकराल के झगड़े में लोग मुस्कुरा रहे थे। प्रशासन भी समझ चुका है कि अब आने वाला चुनाव अतिसम्वेदनशील होगा। नेताओं की सारी शालीनता गाड़ बग गई है बल। बसुमार गरियाते नेता सब कुछ भूल चुके हैं। कई बार मादर-फादर ब्रदर सुनाई देता है.....। पता नहीं कितने दिनों का रहा-बचा उखाऊ-बिखाऊ करने लगते हैं।

मतदाता विशेष गहन पुनरीक्षण (एस आईआर) को लेकर क्याप्प जैसा हो रहा है। हल्द्वानी में तो भाजपा ने कांग्रेस पर व्यवधान का आरोप लगाते हुए अपर जिलाधिकारी को ज्ञापन भी दिया। मतदाता किसको मानें और किसका नाम कट जाएगा, इस बात को लेकर घमासान मच चुकी है।

हरिद्वार में अवधूत मण्डल आश्रम में साधु-सन्तों की उपस्थिति में केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान व मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने एक राष्ट्र एक चुनाव का संकल्प लिया बल। दाज्यू, हम तो यज्ञ करने की सोच रहे हैं और कामना करेंगे कि नेता और गणों की आपसी ध्वेड़ाध्वेड़ न हो। उधर नैनीताल में विधायक सरिता आर्य और सांसद अजय भट्ट की उपस्थिति में हो रहे बहुउद्देश्यीय शिविर में एक ग्रामीण ने खरी-खरी सुना दी ठैरी। क्या जो कहें? रुड़की में रक्षाबन्धन से पहले विक्की नामक युवक ने अपनी दो बहनों की गोली मारकर हत्या कर दी। कलजुग की सनक के लिये कुछ भी कहना कठिन है। रिश्ते-नाते सब मोबाइल को पिठ्या लगा दिये हैं। नैनीताल में तीन युवा सिर्फ इसलिये भिड़ गये क्योंकि उनका विवाद व्हाट्सएप ग्रुप में शुरू हुआ था। होटल में काम करने वाले तीनों सड़क पर आकर भिड़ने लगे, तब जाकर पुलिस ने शान्ति भंग की कार्रवाई की। ओखलकाण्डा में एक व्यक्ति को पुलिस ने पकड़ा है। इसने अपनी पत्नी पर अवैध सम्बन्ध के शक में लाठी से पीटकर हत्या कर दी थी बल। उधर भवाली के व्यापारी नेता नरेश पाण्डे के खिलाफ एक और महिला ने तहरीर दी है। पाण्डे ज्यू तो पॉक्सो मामले में जेल में गोठ्या रखे हैं।

दाज्यू, हल्द्वानी के शीशमहल इलाके में हनुमान चालीसा के पाठ को लेकर लड़भैंसा वाली हालत हो रही है। रामलीला मैदान में पाठ कराने को लेकर समिति और दूसरा पक्ष अपनी-अपनी कह रहा है। रामलीला कमेटी चाहती है उनके हिसाब से आयोजन हो और हनुमान चालीसा करने वाले कहते हैं कि वह तो पहले से ही यह सब करते आ रहे हैं, वह रामलीला कमेटी के अनुसार क्यों करेंगे? दाज्यू, क्या जो कहें। अपनी ठौर सब बनाने वाले हुए। पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगा ही रही है। दो साध्वियों का यौन शोषण के मामलों में बीस साल की सजा काट रहा राम रहीम 17वीं बार जेल से बाहर आया। दो दिन की पैरोल में आकर सिरडा डेरे में समय बिताया बल। अब इसे 2027 में होने वाले पंजाब विधानसभा चुनाव से जोड़कर भी देखा जाने लगा है। तभी तो कह रहे हैं दाज्यू, खींचकर और समेटकर चलो।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

लोक पर्वों पर झूम....

प्रथम पृष्ठ का शेष

मौसम का त्यौहार खतड़ुवे की तैयारी है। जनमाष्टमी को लेकर होने वाले आयोजनों में रानीखेत हमेशा से झांकियों के लिये माना जाता रहा है। इस बार भी भगवान कृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित भव्य झांकियों की प्रदर्शनी हुई। गंगोलीहाट में सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ मटकी फोड़ प्रतियोगिता का आयोजन पिछले वर्षों से होने लगा है। इस बार भी ब्यालपाटा के मैदान में यह सब किया गया, जिसमें मनोरंजन के लिये बड़ी संख्या में लोग उमड़े। दारमा घाटी में इस वर्ष पचासवां गबला देव मेला जबर्दस्त मनाया गया। दारमा के केन्द्रीय गांव दांतों में गबला देव पूजन और दारमा घाटी के समस्त 17 ग्रामवासियों द्वारा उल्लास के साथ इसमें भागीदारी की गई। ढोल-दमाऊ, पारम्परिक वेशभूषा में पूजा अर्चना के बाद खेलकूद सांस्कृतिक आयोजन किया गया। चमोली के कई ग्रामों में बैसी पर्व जारी है। 22 दिन तक जागर, देवी देवताओं का अवतरण, गांव की सीमा पर किलौंण गाड़ना जैसी परम्परा इसमें हुई। नौटी ग्राम और कुरुड़, चांदपुर गढ़ी में नन्दादेवी राजजात की तैयारी की सूचना है।

पेयजल लाइन के लिये खोदी सड़कें दुरुस्त नहीं होने से फूटा गुस्सा

हल्द्वानी। बिठौरिया क्षेत्र में पेयजल लाइन डालने हेतु खोदी गई सड़कों को दुरुस्त कराने की मुहिम की शुरुआत करते हुए बिठौरिया विकास समिति ने कॉलोनियों की मुआयना करने के बाद जीवन्ती बिहार कालोनी में बैठक की। जिसमें वक्ताओं ने सड़कों की बदहाल स्थिति के लिए यूयूएसडीए के खिलाफ जमकर गुब्बार निकाला। तय किया गया कि इस बात को आगे ले जाया जायेगा।

यूयूएसडीए की ओर से क्षेत्र की तमाम कॉलोनियों में पेयजल पाइप लाइन बिछाने का कार्य पूर्ण कर लिए जाने के पर्याप्त समय बाद भी खोदी गई सड़कों में पेंचवर्क और फिलअप का कार्य नहीं किया गया है। लोगों को आवाजाही में दिक्कत को देखते हुए बिठौरिया विकास समिति ने अब इन सड़कों को तत्काल दुरुस्त किये जाने की मुहिम छेड़ दी है। समिति के संरक्षक सेनि. सहा.लेखा परीक्षा अधिकारी रमेश चन्द्र पाण्डे के नेतृत्व में लोगों ने जीवन्तीविहार, रुपवैशाली गौतम और वीरपारु मार्ग कॉलोनी की सड़कों का मुआयना किया। इस दौरान लोगों ने बताया कि 7-8 माह पूर्व पेयजल लाइन डालने के लिये खोदी गई सड़कों को दुरुस्त नहीं किये जाने से भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

लखिया बाबा के.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

वाले, बैलों की जोड़ी, गल्या बल्द व अन्य पात्रों का स्वांग देखने को मिला। उत्सव का मुख्य आकर्षण भगवान शिव के गण वीरभद्र का अवतार माने जाने वाले 'लखिया भूत' रहा, जिसके कीचड़ भरे मैदान में प्रवेश करते ही 'लखिया बाबा की जय' उद्घोष से इलाका गूंज उठा। काले रंग के विशालकाय मुखौटे, हाथ में बड़ी रस्सियां और रौद्र रूप धारण किये लखिया भूत को देखने के लोगों का जमावड़ा था। उनका यह अलौकिक और विहंगम रूप देखना रोंगटे खड़े करता है। लखिया बाबा ने रौद्र नृत्य करते हुए पूरे मैदान की परिक्रमा करते हुए सभी को सुख-समृद्धि का आशीर्वाद दिया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

एआई

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नौकरियां जाने का खतरा फिलहाल कम है

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

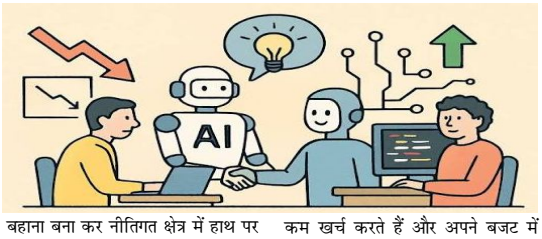

आर्टिफिशल इंटेलिजेंस जैसी तकनीक के आने से दुनिया में यह डर पैदा हुआ है कि कहीं मजदूरों की जगह रोबॉट (यंत्र-मानव या कम्प्यूटर मानव) न ले लें। पर संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों का मानना है कि नयी तकनीक से व्यापक बेरोजगारी जैसी समस्या पैदा होने की सम्भावना नहीं है क्योंकि मनुष्य अपनी रचनात्मक क्षमताओं के चलते वह अब भी इन चीजों से आगे हैं। साथ ही संयुक्त राष्ट्र का यह भी कहना है कि तकनीक से लोगों को जोड़ना होगा ताकि लोग उसका आसानी से इस्तेमाल कर सकें। इसके लिए नीतियों की जरूरत है क्योंकि तकनीकी प्रगति का बहाना बनाकर नीतियों के स्तर पर हाथ पर हाथ रखे नहीं बैठा जा सकता। संयुक्त राष्ट्र श्रम संगठन (आईएलओ) वृहद आर्थिक नीति एवं रोजगार प्रभाग के प्रमुख एक्कहार्ड अर्नस्ट का कहना है कि विनिर्माण क्षेत्र को आर्टिफिशल इंटेलिजेंस से लाभ नहीं होगा। ऐसे में, कम से कम विकासशील देशों में तो इसके चलते रोजगार के अवसरों का सफाया होने के अनुमान सही नहीं होंगे।

आर्टिफिशल इंटेलिजेंस का असर निर्माण कार्य, स्वास्थ्य सेवा और कारोबार पर पड़ेगा और इन क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्रभावित हो सकते है। मामला नौकरी के अवसर खत्म होने से ज्यादा काम के स्वरूप में बदलाव का है। इन क्षेत्रों के कर्मचारियों के नाम के आगे नए तरह के काम जुड़ेंगे जिसमें उनकी मदद के लिए कम्प्यूटर और रोबोट लगे होंगे। आर्टिफिशल इंटेलिजेंस के एल्गारिदम से उन कामों में मशीन का इस्तेमाल हो सकता है जो निरन्तर एक ढर्रे पर चलते हैं। मनुष्य ऐसे कामों की जगह पारस्परिक सम्पर्क, सामाजिक और भावनात्मक कौशल से जुड़े क्षेत्रों पर ध्यान देगा। आईएलओ के व ने यह भी कहा है कि कम्प्यूटर आधारित आर्टिफिशल इंटेलिजेंस से विकासशील देशों को भी लाभ होगा और वहाँ यह लाभ कृषि जैसे क्षेत्रों में अधिक होगा। उनका कहना है कि उनके किसान अब यंत्रों के माध्यम से मौसम के अनुमान और बाजार की कीमतों की ताजा से ताजा जानकारी हासिल कर रहे हैं। अफ्रीका महाद्वीप में सहारा मरुस्थल के दक्षिण के देशों के किसान मोबाइल एप के माध्यम से फसलों पर लगे कीटों की पहचान की पहचान कर सकते है। उन्हें संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की मदद से विकसित किया गया है। अर्नेस्ट का कहना है कि जरूरत लोगों को डिजिटल/कम्प्यूटर प्रौद्यगिकी से जोड़ने की है ताकि उनको ऐसा न लगे कि वे मशीन को चला ही नहीं सकते, उसके साथ निर्देश के आदन-प्रदान नहीं कर सकते। वे मशीन को उसी तरह से इस्तेमाल कर सकें जैसे वह कोई सामान्य औजार हो, जैसे कोई कुल्हाड़ी या कार का इस्तेमाल करता है। उन्होंने कहा कि 'तकनीक के क्षेत्र में प्रगति का बहाना बना कर नीतिगत क्षेत्र में हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठे रहा जा सकता है। जरूरत है कि (तकनीक के जरिए) अच्छे समाधान के लिए पहल की जाए।' संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक कार्य विभाग के एक ताजा अध्ययन के अनुसार आर्टिफिशल इंटेलिजेंस का श्रम बाजार तथा विषमताओं पर 'बड़ा असर' पड़ेगा। लेकिन इस अध्ययन में कहा गया है कि यह नहीं कहा जा सकता कि यह असर ठीक इसी तरह से होगा और इसे स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर नीतियां के माध्यम से आकार दिया जा सकता है। हालांकि आज भी यह एक प्रचलित धारणा बनी हुई है, लेकिन तकनीकी बेरोजगारी की गलत भविष्यवाणियां सभी अर्थशास्त्रियों से छिपी नहीं हैं। कुछ आशावादी यह तर्क देते हैं कि एआई श्रमिकों को प्रतिस्थापित करने के बजाय उनकी क्षमता को बढ़ाएगा सम्भवत: सबसे कम कुशल श्रमिकों की। वहीं कुछ अन्य का तर्क है कि श्रमिकों को प्रतिस्थापित करना जितना आसान लगता है, उतना आसान नहीं है क्योंकि नौकरियां कई कार्यों का समूह होती हैं और एआई उन सभी कार्यों को सहजता से करने में सक्षम नहीं हो सकता है। इस प्रकार के तर्क महत्वपूर्ण हैं और कार्य के सूक्ष्म अर्थशास्त्र पर आधारित हैं। हालांकि, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सामने व्यापक बेरोजगारी के खिलाफ सबसे ठोस तर्क व्यापक अर्थशास्त्र द्वारा ही प्रस्तुत किए जाते हैं। अक्सर इस बात को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है कि तकनीक में स्वाभाविक रूप से अपस्फीति उत्पन्न करने की क्षमता होती है। जब इसका व्यापक प्रभाव होता है, तो तकनीक लागत और कीमतों को कम करती है, जिससे उपभोक्ताओं की वास्तविक आय और नए सामान और सेवाओं की मांग बढ़ती है और इस प्रकार नए रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। श्रम बाजार का ऐसा पुनरुद्धार संयोग से कहीं अधिक तर्कसंगत है और यह बार-बार देखने को मिला है। कम कीमतें अर्थशास्त्रियों की भाषा में वास्तविक आय लाभ कहती हैं। उपभोक्ता कम खर्च करते हैं और अपने बजट में बची अतिरिक्त राशि का उपयोग अक्सर नए सामान और सेवाओं की खपत बढ़ाने के लिए करते हैं, जिससे अन्ततः नए रोजगार सृजित होते हैं।

यह सच है कि इस प्रक्रिया में हमेशा कुछ क्षेत्रों में नौकरियों का नुकसान होता है और इस प्रकार सूक्ष्म आर्थिक संकट उत्पन्न होता है, लेकिन यह नए रोजगार और व्यापक आर्थिक लाभ का एक विश्वसनीय मार्ग भी साबित हुआ है। असफलता के ऐसे इतिहास को देखते हुए यह आश्चर्यजनक लग सकता है कि निराशावादी लोग तकनीकी बेरोजगारी की भयावह कहानियों पर ही टिके हुए हैं। लेकिन प्रौद्योगिकी के कारण होने वाली नौकरी की हानियों को पहचानना आसान है, जो अक्सर एक ही जगह केन्द्रित होती हैं और तेजी से घटित हो सकती हैं, जबकि नई नौकरियों के सृजन को पहचानना मुश्किल है, जो आमतौर पर बिखरी हुई होती हैं और समय के साथ घटित होती हैं। तकनीकी विकास उपभोक्ताओं की मांग और कम्पनियों की आपूर्ति पर निर्भर है। यह इस पर निर्भर है कि कर्मचारी तकनीक को विकसित करने में कितने सक्षम हैं और ग्राहक ऐसी तकनीक चाहता है या नहीं। उन्होंने ऑनलाइन खरीदारी के बढ़ते ट्रेंड को भी उपभोक्ताओं के व्यवहार में आए बदलाव का उदाहरण माना है।

20वीं सदी में ऑटोमोबाइल सेक्टर ने घोड़ागाड़ी को चलन से बाहर कर दिया लेकिन इसी के साथ उसने कार निर्माण से लेकर सर्विसिंग तक ढेरों रोजगार के अवसर पैदा कर दिए। हाल के वर्षो में मोबाइल एप बनाने वालों का बड़ा बाजार तैयार हो गया है। स्मार्टफोन आने से पहले इनका कोई अस्तित्व ही नहीं था। अन्स्र्ट ने एआइ तकनीक को अपनाने में आने वाली कई नियामकीय चुनौतियों का भी जिक्र किया। भारतीय कम्पनियों में नियुक्तियों की स्थिति इस साल बेहतर रहने की उम्मीद है। यूबीएस एविडेंस लैब के सी-सुइट सर्वे में यह बात सामने आई है।

ज्योतिष की बातें 297

7 सितम्बर 2026 को बुध अपनी उच्चराशि कन्या में प्रवेश करेगा। वहाँ पर समग्रह मंगल व शनि की अशुभ दृष्टि भी बुध के ऊपर होगी। फिर भी कुल मिलाकर बुध अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। फलदीपिका के अनुसार बुध का गोचर दूसरे, चौथे, छठवें, दसवें तथा ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है अत: बुध बुद्धि, व्यापार, वाणिज्य, लेखन आदि अपने कारक विषयों में अगले 19 दिन तक सिंह, मिथुन, मेष, कुम्भ, धनु व वृश्चिक राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। शेष अन्य राशियों को भी सामान्य शुभफल प्रदान करेगा।

12 सितम्बर 2026 को अभी तक अस्त चल रहा बुध कन्या राशि में पश्चिम दिशा में उदय हो जाएगा। अत: बुध से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में वृद्धि प्रतीत होगी।

इस स्तम्भ में ग्रहों का गोचरफल मुख्यतया फलदीपिका ग्रन्थ के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक ग्रह का अलग-अलग गोचरफल लिखा जाता है। व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्म कुण्डली, महादशा आदि पर निर्भर करता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार 179

मुम्बई का मराठीवाद

आजकल मुम्बई में गैर मराठी लोगों को मराठी सिखाने का अभियान चल रहा है। आबादी के हिसाब से मुम्बई की लगभग सवा करोड़ से अधिक की आबादी में मराठी बोलने वालों की संख्या केवल एक तिहाई बची है। शेष दो तिहाई में केवल हिन्दी बोलने वाले ही नहीं बल्कि गुजराती, मलयालम, तमिल, कन्नण, तेलगू आदि विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले भी हैं। मुम्बई में सम्पूर्ण भारत के लोग रहते हैं इसलिए आपस में प्राय: हिन्दी में व्यवहार करते हैं। यदि सभी गैर मराठी लोग मुम्बई छोड़ दें तो यह मुम्बई देश की आर्थिक राजधानी रह पाएगी क्या? किसी भी नगर, राज्य या देश का विकास वहाँ पर आने वाले प्रवासी नागरिकों पर ही निर्भर करता है। अमेरिका को भी यदि बाहर के लोग छोड़ दें तो अमेरिका में खण्डहर ही बचेगा।

जहाँ तक मराठी बोलने की बात है तो मुम्बई में यदि कोई एक व्यक्ति दूसरे से मराठी में बात करता है तो दूसरा उसको हिन्दी में जवाब देता है। मराठी भाषी लोग भी आपस में मराठी में बातचीज नहीं करते, अपितु बहुत से लोग अपने बच्चों से भी हिन्दी में बातचीज करते हैं। लेकिन जब राजनीति की बात आती है तो 'मुम्बई मराठी माणसाची' का नारा लगाने लगते हैं।

भाषा का विवाद प्राचीन काल में कभी नहीं रहा। प्राचीन काल में लोग संस्कृत में व्यवहार करते थे और अर्वाचीन काल में हिन्दी में व्यवहार कर रहे हैं। ऐसा ही विवाद देश के अन्य महानगरों में और कर्नाटक आदि राज्यों में देखा जाता है। इसके पीछे वास्तव में सामाजिजक कारण न होकर राजनैतिक कारण हैं। जनता को नेताओं की धूर्तचाल से सावधान रहना चाहिए। फिर भी मेरा मानना है कि किसी भी व्यक्ति को अपनी मातृभाषा का त्याग नहीं करना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

अल्मोड़ा से जिला अस्पताल शिफ्ट करने का विरोध

कांग्रेसियों ने प्रदर्शन करते हुए पुतला फूंका

अल्मोड़ा। जिला चिकित्सालय अल्मोड़ा को रानीखेत स्थानान्तरित किये जोन की प्रक्रिया का जबर्दस्त विरोध शुरू हो चुका है। कांग्रेसियों ने चौक बाजार में प्रदर्शन करते हुए प्रदेश सरकार का पुतला फूंका। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि जिला चिकित्सालय अल्मोड़ा की जनता के लिये महत्वपूर्ण स्वास्थ्य केन्द्र है, इसे शिफ्ट करना जनता के साथ अन्याय होगा। पार्टी के महानगर अध्यक्ष तारा चन्द्र जोशी ने चेतावनी दी कि यदि सरकार ऐसा करती है तो व्यापक जन आन्दोलन होगा। प्रदर्शन करने वालों में व्यापार मण्डल नेता भी थे। इस बीच पूर्व विधायक कैलाश शर्मा ने जिला अस्पताल को नगर से शिफ्ट किये जाने की चर्चा को भ्रामक बताया और कहा कि स्वास्थ्य मंत्री से बातचीत की गई है।

जिला अस्पताल जौलजीबी में स्थानान्तरित करने की मांग

पिथौरागढ़। हिमालय बचाओ संघर्ष समिति ने जिला अस्पताल को जौलजीबी में स्थानान्तरित करने की मांग की है। समिति ने कहा है कि भारत चीन एवं नेपाल सीमा की जनता को जिला अस्पताल की खास आवश्यकता है। इसके लिये शीघ्र समिति का एक प्रतिनिधिमण्डल देहरादून जाकर मुख्यमंत्री से भेंट करेगां

पिथौरागढ़ जिला मुख्यालय में मेडिकल कालेज बनने के बाद जिला अस्पताल को शिफ्ट करने के लिये शासन स्तर पर कवायद चल रही है। इस बीच समिति ने सबसे पहले जिला अस्पताल को जौलजीबी शिफ्ट करने की मांग उठा कर अन्य संगठनों को पीछे छोड़ दिया है।

समिति के प्रदेश अध्यक्ष जगत सिंह मर्तोलिया ने कहा कि जौलजीबी में जिला अस्पताल बनने के पीछे 15 तर्क हैं। जौलजीबी के आसपास विकासखण्ड धारचूला, कनालीछीना एवं डीडीहाट की भूमि में कहीं पर भी पर्याप्त भूमि उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी समिति की है। कहा कि जिले के चार विकासखण्ड मुनस्यारी, धारचूला, डीडीहाट, कनाली छीना के अलावा नेपाल के अधिसंख्यक रोगियों के लिये जौलजीबी उपयुक्त स्थान है। भविष्य में टनकपुर से जौलजीबी मोटर मार्ग शुरु होने तथा बांसबगड़ से बंगापानी मोटर मार्ग के बनने के बाद विकासखण्ड मूनाकोट, बेरीनाग सहित बागेश्वर जिले के कपकोट की जनता को भी इसका लाभ होगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मानिला में वन्यजीवों से निजात दिलाएं

सल्ट। बढ़ते मानव-वन्यजीव संघर्ष और इसके चलते हो रहे पलायन को लेकर मानिला में ग्रामीणों की सभा हुई। जिसमें वन्यजीव खौफ के विरोध में आन्दोलन करने वालों पर दर्ज मुकदमे वापस लेने तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाने की मांग उठाई गई।

नरगोली-बेरीनाग मार्ग की अनदेखी

बागेश्वर/काण्डा। नरगोली-बेरीनाग मोटर मार्ग की अनदेखी पर क्षेत्रवासियों में नाराजी है। प्रदर्शन कर रहे ग्रामीणों को सांसद अजय टम्टा ने एक माह के भीतर टेण्डर प्रक्रिया पूरी करने का भरोसा दिया और विधायक फकीर राम टम्टा ने भी हर हाल काम करने आश्वासन दिया, इसके बाद फिलहाल आन्दोलन स्थगित कर दिया गया है।

सोमेश्वर अस्पताल दुर्दशा पर रोष

अल्मोड़ा। सोमेश्वर तहसील के राजकीय एलोपैथिक चिकित्सालय भैसड्गांव की दुर्दशा पर रोष प्रकट करते हुए कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने धरना-प्रदर्शन किया। जीर्ण शीर्ण भवन के सुधार सहित सुविधाओं को लेकर मांग की है। सुनवाई न होने पर उग्र आन्दोलन की चेतावनी भी दी है।

पत्रकारों प्रकाशकों को सम्मान मिले

हल्द्वानी। पर्वतीय पत्रकार महासंघ ने सीएम को पत्र भेजकर प्रदेश के पत्रकारों, प्रकाशकों एवं लघु-मझौले समाचार पत्रों के संरक्षण, सम्मान एवं सशक्तिकरण हेतु आवश्यक मांग की है। महासंघ के अध्यक्ष सुरेश पाठक ने कहा कि राज्य आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले इन पत्रों को सम्मान मिलना चाहिये।

रामगंगा पार करने को नाचनी में पुल

कपकोट। पिथौरागढ़ और बागेश्वर की सीमा पर रामगंगा नदी को पार करने के लिये 110 मीटर लम्बा मोटर पुल बनेगा। लगभग 24 करोड़ रुपये का प्रस्ताव इसके लिये तैयार किया गया हे। एनआइटी की तकनीकी जांच पूरी होने के साथ ही लोनिवि बागेश्वर ने प्रस्ताव शासन को भेजा है। पुल निर्माण होने से बिचला दानपुर और मेहरगढ़ क्षेत्र सहित दोनों जनपदों के लोगों को लाभ मिलेगा। क्योंकि वर्तमान में तो पुल न होने से ट्राली के सहारे आवाजाही की जा रही है। जान जोखिम में डालकर स्कूली बच्चे, महिलाएं ग्रामीण ट्राली के सहारे रोजमर्रा के कार्य करते हैं। विधायक कपकोट सुरेश गढ़िया ने बताया है कि अंग्रेजों के जमाने का पुराना झूलापुल था जो दस वर्ष पूर्व तेज बहाव में बह गया। अब सरकार नए मोटर पुल के निर्माण को प्रतिबद्ध है। विधायक निधि से 15 लाख रुपये खर्च कर सड़क निर्माण भी किया गया है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और हमारा समाज विषय पर व्याख्यान

अल्मोड़ा। भारत ज्ञान विज्ञान समिति तथा बच्चों की पत्रिका बालप्रहरी द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिवस के अवसर पर आयोजित 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण और हमारा समाज' विषय पर आयोजित व्याख्यान में प्रख्यात विज्ञान लेखक एवं बालसाहित्यकार देवेन्द्र मेवाड़ी ने कहा कि विज्ञान हमें क्या, क्यों तथा कैसे आदि तर्क करना सिखाता है। उन्होंने कहा कि विज्ञान हमें सवाल पूछने के लिए प्रेरित करता है। हमारे मन में जिज्ञासा पैदा करता है। उन्होंने कहा कि विज्ञान हमें प्रकृति से जोड़ता है। उन्होंने बहुत ही सरल भाषा में कृषि ऊपज यानी कृषि विज्ञान को बताया। विज्ञान पर आधारित लगभग 30 पुस्तकों के लेखक देवेन्द्र मेवाड़ी ने कहा वर्षों से हमारा समाज मानता रहा है कि सूरज पृथ्वी के चक्कर लगाता है।

परिक्रमा

फचैऽक

छेदै छेद करि गैछ पैलेटगन, उल्याइणी वां नानतिन सबै ननतिनन में को मारल फैर, येसि काव तो न देखि कभै येसि काव तो न देखि कभै, पुर देश में है रै हाहाकार असण पसण में सबासब छन, खिसिया गै आब सरकार डंडन में लै करंट छी बल, पुलिसल चलाई जो दनादन भतकि सकैं कुर्सी कभै लै, छेदै छेर करि गैछ पैलेटगन।

गणेश पाण्डेय

सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिये चिकित्सा सुविधा बढ़ाई जानी चाहिये

गिरीश चन्द्र उप्रेती

देहरादून। सीजीएचएस सेवानिवृत्त केन्द्रीय कर्मचारी उत्तराखण्ड में एकमात्र डिस्पेंसरी दून में है। पचास हजार लोगों के लिये पूरे प्रदेश में एकमात्र स्थान होने से दूरदराज के लोगों को परेशानी होती है। जोहार-मुनस्यार से लेकर चमोली उत्तरकाशी तक लोगों सीएचएस का अस्पताल डिस्पेंसरी और डाक्टर नहीं होने से इसमें आश्रित होना पड़ता है, इसके लिये उन लोगों को होटल का खर्चा अलग और सीएचएस के चक्कर लगाने होते हैं। सेवानिवृत्ति के बाद सीनियर सिटीजन लम्बी कतार में खड़ज्ञ होना पड़ता है और तब जाकर कहीं उनका नम्बर आता है। यदि रैफर केस देहरादून में हो तो कैलास कनिष्क मैक्स और ग्राफिक एरा जैसे हॉस्पिटल का हाल भी इन वरिष्ठ जनों के लिये वैसा नहीं है जैसा प्रचारित किया जाता रहा है। इस दिशा में स्वास्थ्य मंत्रालय ने निगरानी करवानी चाहिये। साथ ही स्वास्थ्य मंत्री ने निर्देश देने चाहिये कि वरिष्ठ जनों को दवाई के लिये चक्कर न लगाने पड़ें।

जंगली जानवरों के आतंक से निपटने के लिये बनेगी स्पेशल टास्क फोर्स

बागेश्वर। जिले में जंगली जानवरों के बढ़ते आतंक से निपटने के लिये वन विभाग स्पेशल टास्क फोर्स बना रहा है। बन्दर, जंगली सूअर, भालू, गुलदार के आतंक से निपटने के लिये विभाग यह तैयारी में जुटा है। प्रभागीय वनाधिकारी प्रकाश चन्द्र आर्य ने बताया कि टीम के सक्रिय होने के बाद मानव वन्यजीव संघर्ष को कम करने के साथ-साथ ग्रामीणों की सुरक्षा और फसलों को होने वाले नुकसान को रोकने पर खास ध्यान दिया जाएगा। टास्क फोर्स उन गाँवों में विशेष गश्त करेगी जहाँ जंगली जानवरों की आवाजाही या आतंक की शिकायतें मिलती हैं। सम्वेदनशील क्षेत्रों में ड्रोन और ट्रैप कैमरों के द्वारा नियमित निगरानी रखी जाएगी। आवासीय क्षेत्रों में वन्यजीवों की उपस्थिति की जानकारी मिलने पर वन विभाग की टीम कार्रवाई करेगी। वन्यजीवों को पकड़ने के बाद नियमानुसार उनके प्राकृतिक आवास में छोड़ा जायेगा।

गैरसैण मे बनेगा केन्द्रीय विद्यालय

नई दिल्ली। गैरसैण में शीघ्र ही केन्द्रीय विद्यालय खुलेगा। भाजपा के मीडिया प्रभारी व सांसद अनिल बलूनी की शिक्षा मंत्री प्रहलाद जोशी भेंट के बाद यह उम्मीद है। बलूनी ने रामनगर, यमकेश्वर और देवप्रयाग में भी केन्द्रीय विद्यालय स्थापना को कहा।

प्रवासियों के लिये एकीकृत पोर्टल

देहरादून। उत्तराखण्ड से पलायन कर चुके प्रवासियों की घर वापसी को सुगम बनाने के लिये सरकार डिजिटल माध्यम का प्रयोग करेगी। पलायन आयोग द्वारा आयोजित प्रवासी पंचायतों में बड़ी संख्या में प्रवासी अपने गाँव लौटकर स्वरोजगार की इच्छा व्यक्त कर रहे हैं। आयोग के उपाध्यक्ष डॉ.एस.एस.नेगी ने बताया है कि घर वापसी के इच्छुक प्रवासियों के लिये एकीकृत पोर्टल सुविधा होगी।

धौलछीना-सेराघाट हाईबे बदहाल

सेराघाट। धौलछीना-सेराघाट तक स्टेट हाईबे की बदहाली पर नाराजी जताते हुए यूकेडी नेता विनय किरौला के नेतृत्व में ग्रामीणों ने प्रदर्शन करते हुए सड़क के बड़े गड्ढों पर पौधे रोपते हुए रोष जताया। कहा कि बरसात से पहले लोनिवि ने गड्ढों को भरने के लिये पैचवर्क किया था। यदि सड़क सुधार नहीं हुआ तो धरना-प्रदर्शन किया जायेगा।

चम्पावत में ऑल वेदर स्विमिंग पुल

चम्पावत। सीएम की घोषणा के क्रम में खेल सुविधाओं के विस्तार को बड़ी सौगात मिलीह है। जिले में 951.91 लाख रुपये की लागत से ऑल वेदर स्विमिंग पुल का निर्माण किया जायेगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

तेरहवीं का.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

का रिश्ता न हो।

काफी तलाश के बाद सबसे नजदीक के रिश्ते की एक बच्ची के विषय में उसे जानकारी मिली, जिसे गोद लेने पर विचार हो सकता था, वह थी उसकी साली की लड़की। खून का कोई रिश्ता वहाँ तक नहीं पहुँचता था, पर किया भी क्या जा सकता था? इससे नजदीक का कोई बच्चा उपलब्ध ही नहीं था। उसे उस बच्ची को गोद लेना ही पड़ा क्योंकि उसे गोद न लेने की स्थिति में सम्पत्ति ऐसे लोगों के हाथ पड़ सकती थी, जिससे उसका कभी कुछ लेना देना नहीं रहा।

जब कुछ वर्षों में वह निःसन्तान होने के दुख से उबरा तो सम्पत्ति अर्जन की पुरानी प्रवृत्ति फिर उभरने लगी। वह फिर सम्पत्ति के अर्जन में जुट गया। सम्पत्ति अर्जन मनुष्य की मूल प्रवृत्ति भले ही न हो, इसे द्वितीयक प्रवृत्ति में रखा जा सकता है अन्यथा फोर्ड, ओनासिस, खगोशी तथा टाटा नहीं बन सकते।

हंसा ने अकूत सम्पत्ति व धन धान्य का अर्जन कर लिया। ज्यों-ज्यों सम्पत्ति अर्जन की भूख बड़ी त्यों-त्यों खर्च करने में भी कंजूसी बढ़ती गई। उसने अपने खाने पीने का खर्च भी घटा दिया। घर में जो भी सब्जी होती वह उसी से गुजारा चला लेता। बाजार से उसने कभी कोई सब्जी, फल या और चीजें नहीं खरीदी जो स्वास्थ्य के लिये लाभकर हों। खाने पीने की चीजों में कंजूसी करने के कारण उसका स्वास्थ्य खराब रहने लगा। वह समय से पहले ही बूढ़ा हो गया। जब वह बीमार पड़ा तो लोगों ने उसे वैद्य के पास इलाज के लिये जाने की सलाह दी। लोगों ने यह भी प्रस्ताव रखा कि यदि वहचल कर वैद्य के पास नहीं जा सकता तो वैद्य को घर पर ही बुला सकते हैं। उसने लोगों की बात टाल दी क्योंकि उसे डर था वैद्य मुफ्त में तो दवा देगा नहीं, और दवा के लिये पैसे खर्च करने की मनोदशा वह बचपन से ही विकसित नहीं कर पाया था। उसने लोगों सेकह दिया कि उसे वैद्य के इलाज में कोई यकीन नहीं है, फिर जरा दवा की पुड़िया के लिये वैद्य एक दो रुपया झाड़ लेगा।

जब वह किसी तरह इलाज के लिये तैयार नहीं हुआ तो लोगों ने इसका इरादा ही छोड़ दिया। पर जब हंसा की हालत अधिक बिगड़ने लगी तो बिरादरी के लोगों ने आपस में सलाह मशविरा करके तय किया कि वह अपने ही पैसों से दवा खरीद कर लायेंगे। एक दो लोग वैद्य के पास गये। उन्होंने वैद्य को उसकी बीमारी का पूरा हाल बताया तथा उसकी सम्पत्ति अर्जन की असीमित भूख व कंजूसी की चरम सीमा के विषय में भी बताया।

वैद्य बुद्धिमान था। वह वैद्यक का ही विद्वान नहीं था, बल्कि लोगों का इलाज करते-करते मानव मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो चुका था। उसने लोगों से कहा कि पैसा खर्च न करने की उसकी जो आदत बन चुकी है, उसके कारण वह दवा नहीं लेगा, यदि मुफ्त में दवा दे दो तो भी इसका फायदा नहीं होगा क्योंकि उसको तो लगेगा कि इतने रुपये की दवा उसने खा ली है। उसका मनोवैज्ञानिक इलाज हो सकता है। उसे सम्पत्ति जमा करने की आदत है। सम्पत्ति हाथ आने का कोई मौका वह हाथ से नहीं निकलने देगा। उससे तो सिर्फ इस सम्बन्ध में ही बात की जाय कि फलां जगह जमीन जायदाद या मकान सस्ता बिक रहा है तो उसे प्राप्त करने के लिये उसके अन्दर इच्छा शक्ति पनपेगी और जीने की तीव्र इच्छा के समक्ष भयंकर बीमारी भी नहीं टिक सकती।

लोग वहाँ से वापस आये। सोच विचार कर एक ने उसे सम्बोधित किया 'हंसा जी', हंसा की ओर से कोई जवाब नहीं मिला। लोगों ने उसके पास आकर देखा तो पता चला कि वह गहन मूर्छा में आ चुका था तथा कुछ ही पल में और सांसें चलने की आशा थी। वैद्य जी के बताये नुस्खे को आजमाने की गुंजाइश नहीं थी, क्योंकि मूर्छा की अवस्था में कुछ सुनने या समझने की कोई सम्भावना नहीं थी। फिर भी उन्होंने विचार किया कि इसे आजमाने में नुकसान ही क्या है। वह वास्तव में मूर्छित था, किसी तरह का कोई बनावटीपन नहीं था। एक ने यों ही कहा- 'गाँव के रामचन्द की जमीन बड़ी सस्ती निकल रही ह। दस बीस हजार की होगी पर भगवान दास को तीन चार सौ रुपये में ही देने को तैयार हो गया है।' इतना ही कहना था कि अचानक उसकी मूर्छा टूट गयी। वह एक दम चौक कर बैठ गया। बोला- 'सस्ते में किसकी जमीन बिक रही है?' जमीन तो किसी बिन नहीं रही थी, पर लोग अब कहते भी क्यां स्वयं रामचन्द ने कहा- 'जमीन तो मेरी ही बिकाऊ है, आप खरीदना चाहें तो बहुत सस्ते में दे दूंगा।' बस फिर क्या था हंसा एकदम चंगा हो गया। यह रामचन्द का बड़ा त्याग था। उसने आनन-फानन में रामचन्द की जमीन खरीद ली। फिर वह स्वस्थ हो गया। कुछ वर्षों तक तो सब ठीक-ठाक चलता रहा, पर कंजूसी के कारण उसने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही प्रारम्भ कर दी। इस बार भी उसने कोई दवा लेने से इन्कार कर दिया।

इस बार बीमार पड़ने पर उसके इलाज का नुस्खा मालूम होने पर भी किसी ने यह नुस्खा आजमाने की कोशिश नहीं की क्योंकि उसको बचाने का मतलब था स्वयं सम्पत्ति से हाथ धोना। रामचन्द इसका फल भुगत चुका था। हंसा की बीमारी दिन प्रतिदिन बढ़ती ही गई। एक दिन उसके प्राण पखेरू उड़ गये। जो लोग भुक्तभोगी थे, उन्होंने उसकी मृत देह के सामने भी सम्पत्ति का कोई प्रश्न नहीं उठाया क्योंकि उन्हें डर था कि सम्पत्ति के नाम पर चाहे वह अर्जन करने के सम्बन्ध में हो या निकल जाने के, उसके फिर से जी उठने का डर था।

शवायात्रा की तैयारी में समय अधिक लग गया था, इसलिये रात हो गई। लाश को घर पर रखना ठीक नहीं माना जाता था परन्तु रात को दाह-संस्कार भी नहीं किया जा सकता था, क्योंकि सूर्यास्त के पश्चात दाह-संस्कार शास्त्रसम्त नहीं था। गाँव से डेढ़ दो मील की दूरी पर जंगल में एक पुराना वट वृक्ष था, अतः रात होने पर शवयात्रा का पड़ाव भी वहीं पर रखा गया। शव के डोले को पेड़ के तने के सहारे टिका दिया गया, क्योंकि कुछ बूंदा-बांदी हो रही थी और शव के भीगने का डर था। थोड़ा देर में बूँदा-बाँदी हो रही थी और शव के भीगने का डर था। थोड़ा देर में बूँदा-बाँदी बन्द हो गई। लोग जंगल से बड़ी-बड़ी लकड़ियाँ उठा लाये। उन्हें जला कर आग तापने लगे। कुछ देर में अधिकांश लोगों को नींद आ गई, क्योंकि लाश की रखवाली के लिये दो तीन लोग जगे ही थे। रात काटने के लिये उन्होंने तमाम किस्से कहानियाँ एक-दूसरे को सुनायीं, कुछ आधी अधूरी कथाएँ गरूड़ पुराण की चलने लगीं। जब तीसरा पहर होने लगा तो जगे हुए लोगों में शमशान वैराग्य की भावना आने लगी। एक ने कहा- 'देखो, सारा धन धान्य इसी दुनियाँ में रह जाता है। अब हंसा ताऊ को ही ले लो। जिन्दगी भर सम्पत्ति के पीछे भागते रहे, आज जब शरीर छोड़ा तो साथ क्या ले गया? सब धन वैभव धरा का धरा रह गया।'

दूसरा बोला- 'जीवन क्षणभंगुर है। तेरा-मेरा का यह चक्र बेकार है। जीवन में जिस धन को आपने भोग लिया, वही आपके साथ जायेगा।' पहला बोला- 'अब तुम्ही सोचो, जीवनदास की इतनी कीमती जमीन गोपा सस्ते में खरीदने वाला है। हंसा ताऊ आज जिन्दा होते तो गोपा के हाथ यह जमीन लगने थोड़े ही देते। अब ताऊ के क्रिया कर्म में ही बहुत धन खर्च हो जायेगा। जो बच जायेगा वह मुफ्त में ही गोपा हथिया लेगा।' उसके इतना कहते ही उन दोनों ने देखा कि लाश में कुछ हरकत सी हुई। लालटेंने धीमी जल रही थीं, इसलिये उन्होंने उसे साफ देखा।

फिर उन्होंने सोचा कि यूं ही हवा के झौंके से लाश हिल गयी होगी। थोड़ी देर में उन सभी को नींद आ गई। सुबह सबने उठकर देखा तो सब आश्चर्य चकित रह गये। लाश वहाँ पर नहीं थी। लाश अपने आप कहीं जा भी नहीं सकती थी। काफी सोच-विचार के बाद यह मान लिया गया कि लाश को कोई जंगली जानवर उठाकर ले गया होगा। आसपास जंगल छान लिया गया, पर कोई सुराग नही मिला कि लाश कहाँ गई। अब मुख्य प्रश्न यह था कि लाश चाहे जहाँ भी चली गई हो, आगे कि क्रिया-कर्म की व्यवस्था तो की जाए।

हंसा अपार सम्पत्ति छोड़ गया था। अतः उसकी सम्पत्ति से क्रिया-कर्म करना था। बहुत बड़े स्तर पर तैयारियाँ की गयीं। क्रिया-कर्म ठीक प्रकार से चल रहा था। अब तेरहवीं का दिन भी आ गया। तेरहवीं पर दान-दक्षिणा के लिये व्यापक व्यवस्था की गयी थी, इसके लिये हजारों रुपया अलग रखा गया था। प्रातः ही सूर्योदय से पहले लोग स्नानादि के लिये निकले। किसी ने देखा कि गाँव के दूसरे छोर पर हल्के कोहरे के पीछे चाँद सा दिखाई दिया। इस समय चाँद निकलने का कोई समय नहीं था। थोड़ी देर में वह आकृति कुछ स्पष्ट सी होने लगी। लोगों ने देखा कि कोई आदमी हाथ में टिमटिमाती हुई लालटेन लिये हंसा के घर की ओर ही बढ़ रहा है। लालटेन की अर्द्धचन्द्राकार लौ ही कोहरे के कारण चन्द्रमा सी दिखाई पड़ी थी।

जब वह और पास आया तो लोगों को काटो तो खून नहीं। यह हंसा ही चला आ रहा था। लोगों ने आँखें मल के देखा कि कहीं धोखा तो नहीं हो रहा, पर इस धोखे में वह ज्यादा देर तक नहीं रहे, क्योंकि अब तो वह घर पर ही आ पहुँचा था। लोगों को आश्चर्य हुआ कि जो हंसा मर चुका था, वह कैसे जिन्दा हो सकता था। पर इसका जवाब भी हंसा ने ही दिया। वट वृक्ष के नीचे पहरा देते समय लोगों ने सम्पत्ति हाथ से निकलने के सम्बन्ध में जो बात की थी, उससे ही मृत देह में प्रतिक्रिया हुई होगी। वह अर्द्ध मूर्छा की अवस्था में ही अनजाने में लालटेन पकड़ कर जंगल की ओर चला गया था तथा एक गुफा के पास बैठ गया। वहाँ पर वह फिर से मूर्छित हो गया तथा आज जब उसको कठिन मेहनत से अर्जित सम्पत्ति को दान में देने की बात आई तो उसकी मूर्छा टूट गई और वह सीधे यहाँ चला आया।

दान दक्षिणा लेने जितने सुपात्र लोग, मालामाल होने की उम्मीद में वहाँ बैठे थे, वह सब मुँह लटकाये हुए वापस चले गये। हंसा के मरने पर भले ही मातम न छाया हो, पर अब मातम सा अवश्य छा गया।

उत्तराखण्ड में स्वाइन फ्लू के मामले चिन्ता करने वाले हैं

अलर्ट, संक्रमित के साथ सावधानी जरूरी, निगरानी और जांच

देहरादून। उत्तराखण्ड में स्वाइन फ्लू के मामले चिन्ता करने वाले हैं। इंफ्लुएंजा एच1एन1 (स्वाइन फ्लू) के मामले में स्वास्थ्य विभाग ने अलर्ट करने के साथ ही संक्रमित के साथ सावधानी के लिये कहा है। स्वास्थ्य विभाग के अनुमसार संक्रमण से जूझ रहे 5 लोगों की मौत दर्ज की गई है, ये मरीज दूसरी बीमारियों से भी जूझ रहे थे। बताया जाता है कि प्रदेश में मरीजों की संख्या 49 हो गई है जिसमें 34 देहरादून के हैं।

दिल्ली, कर्नाटक, गुजरात, हरियाणा, केरल समेत देश के अन्य राज्यों में ये मामले सामने आ रहे हैं। इस बीच उत्तराखण्ड में इस प्रकार का मामले भी चिन्ता करने वाले हैं। एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम के राज्य सर्विलांस अधिकारी के अनुसार जहाँ भी मरीज सामने आए हैं, उन इलाकों में स्क्रीनिंग तेज कर दी गई है। टीमें माइक्रो स्तर पर कार्य कर रही हैं। दून के सीएमओ डॉ.मनोज कुमार को विशेष निगरानी के निर्देश दिए गए हैं। एम्स के इंटरनल मेडिसिन विभाग के चिकित्सक डॉ.अखिलेश ने संक्रमितों के साथ सावधानी की बात कही है, इनके साथ सम्पर्क में आने वालों को आइसोलेट करना जरूरी है।

सुरेश मेडिकल स्टोर
नियर- टैक्सी स्टैंड
मदकोट रोड
मुनस्यारी
मो.- 8077929044, 9756822576

HIMALAYAN
MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

मिलम बेक हाउस (नियर- टैक्सी स्टैंड चौराहा) मुनस्यारी
सम्पर्क- 8941807388
MILAM BAKE HOUSE CRAFTED IN THE MOUNTAINS
पहाड़ों में तैयार, स्वाद से भरपूर। हिमालय की वादियों से आपके स्वाद तक। आपके लिये लेकर आया है ताजे स्वादिष्ट और गुणवत्तापूर्ण बेकरी उत्पाद।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

लोकविधान2.0 पर क्रियान्वयन विभाग सचिव दीपक कुमार का आह्वान

युवा सोच व नीतियों से संवरेगा खाद्य भविष्य

देहरादूनं ग्राफिक एरा में नौ राज्यों के छात्र-छात्राओं ने अन्नदाता को देश की खाद्य सुरक्षा की रीढ़ बताया। युवाओं ने किसानों को बदलती परिस्थितियों के अनुरूप सक्षम बनाने और अन्नदाता भूमिका को और मजबूत करने जैसे मुद्दों पर चर्चा की। लोकविधान 2.0 के अवसर पर उत्तराखण्ड सरकार के कार्यक्रम क्रियान्वयन के सचिव दीपक कुमार ने युवाओं का आह्वान किया कि वह इस दिशा में आगे आएं। उन्होंने कहा कि भारत खाद्य भविष्य केवल खेतों में होने वाले उत्पादन से नहीं बल्कि मजबूत नीतियों, नवाचार और युवाओं की सक्रिय भागीदारी से आकार लेगा।

दीपक कुमार ने सुझाव दिया कि यूथ पार्लियामेंट में सामने आए सभी प्रस्तावों और सुझावों को उत्तराखण्ड सरकार तक पहुंचाया जाए ताकि युवाओं की सोच और विचारों को नीतियों में स्थान देकर समाज और प्रदेश के विकास में उनका प्रभावी योगदान सुनिश्चित किया जा सके।

इस दो दिवसीय सम्मेलन में उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, पश्चिम बंगाल और जम्मू से 1300 छात्र प्रतिनिधियों ने किसानों के अधिकार, कृषि में एआई के उपयोग, सिंचाई में आधुनिक तकनीक, कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण और वैश्विक व्यापार जैसे विषयों पर संसदीय बहस और नीति निर्माण के जरिए मंथन किया। लोक विधान 2.0 का आयोजन ग्राफिक एरा की यूथ पार्लियामेंट सोसाइटी ने किया था। कार्यक्रम में प्रो वीसी डॉ. सन्तोष एस, सर्राफ, सोसाइटी की चेयरपर्सन डॉ. प्रभा लामा, डॉ. बी.एस.बिष्ट, डॉ. भारती शर्मा, डॉ.गौरव डिमरी उपस्थित थे।

अल्मोड़ा-बागेश्वर में होगा कॉर्निया प्रत्यारोपण

मेडिकल कालेज प्राचार्य डॉ.जी.एस.तितियाल ने संभाली कमान

अल्मोड़ा। अल्मोड़ा और बागेश्वर में कॉर्निया प्रत्यारोपण होने से इस प्रकार के मरीजों को बेहद सुविधा होगी। दरअसल मेडिकल कालेज के प्राचार्य डॉ. जी.एस. तितियाल ने मरीजों को इस सुविधा के लिये कमान सम्भालते हुए कार्य शुरू कर दिया है। मेडिकल कालेज के प्राचार्य एवं नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. तितियाल के द्वारा दिखाई गई तत्परता से पहाड़ के मरीजों को शहरों की ओर नहीं दौड़ना पड़ेगा।

बताते चलें कि डॉ.तितियाल लम्बे समय से कार्निया ट्रांसप्लान्ट का अनुभव रखते हैं। हल्द्वानी मेडिकल कालेज में उनका कार्निया ट्रांसप्लान्ट का अनुभव अब पहाड़ के काम आयेगा। उनके समय में हल्द्वानी मेडिकल कालेज में पिछले दो सालों में करीब 150 ट्रांसप्लान्ट किए जा चुके हैं।

प्राचार्य डॉ.जी.एस.तितियाल ने बताया कि इस माह यानी सितम्बर से एक या दो बार अल्मोड़ा मेडिकल कालेज में कार्निया ट्रांसप्लान्ट कराने की व्यवस्था की जाएगी। जरूरत और मरीजों की संख्या के अनुसार आगे इसकी नियमितता बढ़ाई जा सकती है। योजना के तहत डोनर से प्राप्त कार्निया को अल्मोड़ा लाया जाएगा और हल्द्वानी मेडिकल कालेज के विशेषज्ञ सर्जन अल्मोड़ा पहुंचकर ट्रांसप्लान्ट करेंगे। इस व्यवस्था से मरीजों को ऑपरेशन के लिए लम्बी दूरी तय करने से राहत मिलेगी। दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों से आने वाले मरीजों का खर्च बचेगा।

नेपाल की हालिया ग्लेशियर फटने की घटना को देखते हुए सीमावर्ती गांवों में विशेष सतर्कता की आवश्यकता

मुनस्यारी। नेपाल की हालिया ग्लेशियर फटने की घटना को देखते हुए सीमावर्ती गांवों में विशेष सतर्कता की आवश्यकता है। बादल फटने और भूस्खलन से निपटने के लिए स्पष्ट आपदा प्रबन्धन योजना बनाई जाए तथा विभागवार जिम्मेदारी, समयसीमा और निगरानी तयहोनी चाहिये।

मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने मुख्यमंत्री को इस सम्बन्ध में पत्र देते हुए कहा है कि नेपाल की घटना दहला देती है। आपदा पूर्व तैयारी होना जरूरी है। इसके लिए जोखिम मानचित्र, निकासी मार्ग और सुरक्षित स्थान चिन्हित कर ग्रामीणों को से साझा किए जाएं। सम्वेदनशील परिवारों और विशेष जरूरत वाले लोगों की सूची तैयार की जाए। सायरन, मुनादी और मोबाइल अलर्ट की व्यवस्था नियमित परीक्षण हो। प्रशिक्षित ग्राम स्तरीय स्वयंसेवी दल और नियमित मॉक ड्रिल कराई जाए। राशन, पानी, दवाइयों और आवश्यक सामग्री का भण्डारण किया जाए। वैकल्पिक सड़क, पुल और संचार साधनों की कार्यशीलता जांची जाए। स्थानीय भाषा में एडवाइजरी जारी की जाए। प्रत्येक गांव में नोडल अधिकारी नियुक्त कर सम्पर्क नम्बर सबको बताएं।

कृष्ण जन्माष्टमी, नन्दाष्टमी, लोकपर्व आठू-सातू की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

नवराज सिंह जंगपांगी

नई आबादी, पूरनपुर नैनवाल, लामाचौड़

हल्द्वानी

हिमालय संगीत शोध समिति

(पूर्णकालिक संगीत प्रशिक्षण केन्द्र)

जे.के.पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी

हल्द्वानी

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चौकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379

APNA GHAR 6396098804

चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

नरेन्द्र सिंह रावत

सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)